सार्वजनिक जीवन में महिलाओं की भागीदारी : एक अवलोकन

डॉ. रजनी दुबे
प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान
शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर, उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

सारांश :

आजादी की लड़ाई के दौरान से लेकर आधुनिक भारतीय राजनीति में ऐसी अनेक महिलाओं का वर्चस्व रहा, जिन्होने स्वतंत्रता के आंदोलनों से लेकर स्वतंत्र भारत में सरकार चलाने तक में अपनी अहम भूमिका का निर्वाह किया है। विगत कुछ वर्षो में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी मे वृद्धि हुई है, लेकिन सर्वेक्षण में लगभग 66 प्रतिशत महिलाओं के अनुसार राजनीतिक निर्णय लेने में वे स्वतंत्र नहीं है। राजनीति में महिलाओं की कम भागीदारी का प्रमुख कारण पितृसत्तामक समाज रहा है, साथ ही महिलाओं के ऊपर घरेलू जिम्मेदारियां, सामाजिक-आर्थिक पृष्ठ भूमि, रूढ़िवादिता तथा पर्दा प्रथा भी रहा है। राजनीति में महिलाओं की भागीदारी में वृद्धि करने के लिये आवश्यक है कि संसद में, राजनीतिक दलों में महिलाओं की समान भागीदारी सुनिशिचित करने के लिये ठोस प्रयास किये जाये।

मुख्य शब्द - गुमनाम, वर्चस्व, रूढ़िवाद, भागीदारी।

आजादी की लड़ाई के दौरान गुमनाम और नामवर महिलाओं की सिंध और भारत के अन्य इलाकों में कमी नहीं थी। 19 वीं सदी के खात्मे तक जब इंडियन नेशनल कांग्रेस और 20वीं सदी की शुरुआत में ऑल इंडिया मुस्लिम लीग ने आजादी के लिये लड़ाई शुरू की तो प्रारंभ से ही महिलायें इसमें शामिल रही। 40 की दहाई तक पहुंचते-पहुंचते आजादी की ऊंची लहर पूरे हिंदुस्तान में फैल चुकी थी। इनमें फातिमा जिन्ना, शाइस्ना इकरामउल्ला, सरोजनी नायडू, विजय लक्ष्मी पंडित और दूसरी कई हिंदू मुस्लिम महिलाओं ने हिस्सा लिया।

आधुनिक भारतीय राजनीति में कई ऐसी महिलायें रही हैं, जिनकी ऐतिहासिक भूमिका से हम भली-भांति परिचित हैं। स्वतंत्रता के आंदोलनों के दौरान से लेकर आजाद भारत में सरकार चलाने तक में महिलाओं की राजनीतिक भूमिका और पहल अहम रही है। विश्व स्तर पर यदि भारत की सक्रिय राजनीति में महिलाओं की स्थिति पर प्रकाश डालें तो भारत 193 देशों में 141 से स्थान पर है। विश्व स्तर पर संसद में 22.6 फीसदी महिलाओं की भागीदारी है जिसमें भारत का औसत सिर्फ 12 फीसदी है। वही रवांड़ा में 63.8 प्रतिशत महिला सांसद हैं नेपाल में 29.5 फीसदी अफगानिस्तान में 27.7 फीसदी चीन में 23.6 फीसदी है।

भारत में आजादी के बाद पहली केंद्र सरकार (जवाहरलाल नेहरू की सरकार में) कैबिनेट मिनिस्ट्री में सिर्फ एक महिला (राजकुमारी अमृत कौर) थी, जिन्हें हेल्थ मिनिस्ट्री का चार्ज सौंपा गया था।

लाल बहादुर शास्त्री की सरकार में एक भी महिला को जगह नहीं दी गई। यहां तक कि श्रीमती इंदिरा गांधी

5 वीं, 6 वीं, 9 वीं कैबिनट में भी एक भी महिला यूनियन मिनिस्टर नहीं थी। राजीव गांधी की केबिनेट में सिर्फ एक महिला (मोहसिना किदवई) को शामिल किया गया।

मोदी सरकार में महिलाओं की स्थिति पहले से बेहतर हुई है। सक्रिय राजनीति में महिलाओं की दयनीय स्थिति के लिये राजनीतिक पार्टियां ही नहीं बल्कि हमारा समाज भी उत्तरदायी है जो महिलाओं को राजनीति में स्वीकारने को तैयार नहीं होता।

हाल ही में "लोकनीति CSDS (Centre for study of Developing Societies) और कोनराड एडेनॉयर स्टिफटंग (Konrad Adenauer Stiftung) ने एक सर्वेक्षण रिपोर्ट जारी की जिसमें भारतीय महिलाओं और उनकी राजनीतिक सक्रियता से संबंधित विभिन्न पक्षों का अध्ययन के पश्चात् प्रमुख निष्कर्ष इस प्रकार हैं-

1. सर्वेक्षण में पाया गया कि महिलाओं की चुनावी भागीदारी में उनकी सामाजिक व आर्थिक स्थिति का विशेष प्रभाव होता है। उच्च सामाजिक वर्ग (जाति) व आर्थिक वर्गों की महिलाओं में राजनीतिक भागीदारी अधिक पाई गई जबकि सामाजिक-आर्थिक तबके की महिलाओं में यह भागीदारी अत्यधिक कम थी।
2. पिछले कुछ वर्षों में चुनावों में मतदाता के रूप में महिलाओं की भूमिका बढ़ी है।
3. महिलायें अपनी राजनीतिक पसंद को लेकर स्वायत्त हो रही हैं किंतु यह प्रचलन शहरी क्षेत्रों की तथा शिक्षित महिलाओं में अधिक देखा गया।

राजनीति में पुरुषों का वर्चस्व

इस सर्वेक्षण के माध्यम से ज्ञात हुआ है कि महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में पुरुषों का वर्चस्व प्रमुख बाधक है। 50 वर्ष से अधिक उम्र की दो-तिहाई महिलाओं का मानना है कि पुरुषों के राजनीतिक वर्चस्व के कारण महिलाओं को राजनीति में अवसर नहीं मिलता। इसके अलावा अधिकांश महिलाओं का मानना है कि भारतीय मतदाता महिलाओं की तुलना में पुरुष उम्मीदवारों के पक्ष में अधिक मत देते हैं। राजनीतिक अवसरों में किसी चुनाव लड़ना, राजनीतिक दल का टिकट मिलना तथा चुनाव जीतने की प्राथमिकता आदि को शामिल किया गया है।

सामाजिक-राजनीतिक पृष्ठभूमि - सर्वेक्षण के माध्यम से यह पता चला है कि किसी महिला के लिये राजनीति में भाग लेने के लिए उसकी पृष्ठभूमि महत्वपूर्ण है। अधिकांश महिलाओं का मानना है कि ऊंची जाति की महिलाओं के लिए राजनीति में हिस्सा लेना आसान है, जबकि निम्न जाति की महिलाओं के लिये तुलनात्मक रूप से कठिन है।

इसके अलावा राजनीतिक पृष्ठभूमि वाली महिला के लिये किसी गैर राजनीतिक पृष्ठभूमि वाली महिला की तुलना में राजनीतिक गतिविधियों में हिस्सा लेना आसान है।

राजनीतिक निर्णय में पितृसत्ता का प्रभाव - अधिकांश महिलाओं का मानना है कि घरों में राजनीतिक निर्णय लेने में उन्हें कम स्वतंत्रता प्राप्त होती है, इसका प्रमुख कारण पितृसत्तात्मक समाज तथा रूढ़िवादी सामाजिक ढांचा है।

सोशल मीडिया के माध्यम से राजनीतिक भागीदारी - सोशल मीडिया के माध्यम से राजनीति में भागीदारी करने के मामले में महिलाओं की संख्या काफी कम है। सर्वेक्षण में केवल 17 प्रतिशत महिलाओं ने स्वीकार किया कि वे किसी भी प्रकार से सोशल मीडिया पर राजनीतिक रूप से सक्रिय हैं, जबकि 83 प्रतिशत महिलाओं के अनुसार सोशल मीडिया पर राजनीतिक रूप में सक्रिय नहीं है।

राजनीतिक भागीदारी में महिलाओं की स्वतंत्रता - हालांकि विगत कुछ वर्षों में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में वृद्धि हुयी है। लेकिन सर्वेक्षण में लगभग 66 प्रतिशत महिलाओं ने कहा है कि वे राजनीतिक निर्णय लेने में अभी भी स्वतंत्र नहीं है।

राजनीति में महिलाओं का कम भागीदारी के प्रमुख कारण - राजनीति में महिलाओं की कम भागीदारी के प्रमुख कारणों में पितृसत्तात्मक समाज तथा इसकी संरचनात्मक कमियां है। इसकी वजह से महिलाओं को कम अवसर मिलते हैं तथा वे राजनीतिक प्रतिस्पर्धा में पुरुषों से काफी पीछे रह जाती हैं। लगभग एक-तिहाई महिलाओं ने यह माना है कि पितृसत्तात्मक समाज उनकी राजनीतिक भागीदारी में बाधक है।

घरेलू जिम्मेदारियां - सर्वेक्षण में अधिकांश महिलाओं ने स्वीकार किया कि घरेलू जिम्मेदारियां जैसे बच्चों की देखभाल घर के सदस्यों के लिये खाना बनाना व अन्य पारिवारिक कारणों से वे राजनीति में भाग नहीं ले पाती लगभग 13 प्रतिशत महिलाओं ने राजनीति में उनकी कम भागीदारी के लिये घरेलू जिम्मेदारियों को कारण मात्र है।

व्यक्तिगत कारण - कई महिलायें व्यक्तिगत कारणों की वजह से भी राजनीति में सक्रिय रूप से भाग नहीं ले पाती। ये व्यक्तिगत कारण है- राजनीति में रुचि न होना, जागरूकता का अभाव, शैक्षिक पिछड़ापन आदि। लगभग 10 प्रतिशत महिलायें व्यक्तिगत कारणों से राजनीति में भाग नहीं ले पाती।

सांस्कृतिक प्रतिबंध एवं रूढ़िवाद - सांस्कृतिक मापदंडो मामलों तथा रूढ़िवादिता के कारण भी महिलायें राजनीति में भाग नहीं ले पाती। सांस्कृतिक प्रतिवंधों में पर्दा प्रथा, किसी अन्य पुरुष से बातचीत न करना, महिलाओं का बाहर निकलना आदि शामिल है। लगभग 7 प्रतिशत महिलाओं ने माना कि सांस्कृतिक कारणों से वे राजनीति में भाग नहीं लेती है।

सामाजिक आर्थिक कारण - कमजोर सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि भी महिलाओं की राजनीति भागीदारी में अवरोध उत्पन्न करते हैं।

महिलाओं को लेकर राजनीतिक दलों की उदासीनता - राष्ट्रीय स्तर की राजनीति में महिलाओं की भागीदारी को लेकर देश के राजनीतिक दलों तथा सरकारों ने उदासीनता प्रदर्शित की है।

प्रस्तावित महिला आरक्षण जो कि सांसद तथा राज्य की विधानसभाओं में महिलाओं के लिये आरक्षण का प्रावधान करता है को पारित करने में सभी राजनैतिक दल निरूत्साहित प्रतीत होते हैं।

राजनीति में महिलाओं की भागीदारी में वृद्धि हेतु आवश्यक उपाय

संसद में महिलाओं के लिए आरक्षण

यद्यपि भारतीय सविधान में 73 वें और 74 में संसोधन द्वारा महिलाओं के लिये स्थानीय निकाय की एक-तिहाई सीटों के आरक्षण का प्रावधान किया गया है लेकिन राजनीति में महिलाओं की समान भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए अन्य प्रयास किये जाने की भी आवश्यकता है। महिलाओं को लोकसभा और सभी राज्यों की

विधानसभाओं में 33 प्रतिशत आरक्षण प्रदान करने संबंधी महिला आरक्षण विधेयक को तत्काल पुनःस्थापित एवं पारित किए जाने की आवश्यकता है।

राजनीतिक दलों में महिलाओं के लिये आरक्षण :

यद्यपि यह कदम महिला सांसदों की संख्या में वृद्धि के संबंध में कोई ठोस आश्वासन प्रदान नहीं करता है कि किंतु राजनीति में महिलाओं की पर्याप्त संख्या सुनिश्चित करने के लिये ठोस कदम हो सकता है। विश्व के कई देशों में यह प्रावधान किया गया है कि जैसे- स्वीडन, नार्वे, कनाड़ा, ग्रेट ब्रिटेन और फ्रांस आदि।

महिलाओं के सर्वांगीण विकास हेतु माहौल प्रदान करना :

राजनीति व अन्य विविध क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिये आवश्यक है कि समाज में प्रत्येक स्तर पर महिला सशक्तिकरण तथा उनकी सामुदायिक भागीदारी के लिये प्रयास किए जाएं ताकि उनमें आत्मविश्वास नेतृत्व क्षमता आदि गुणों का विकास हो सके।

इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि सक्रिय राजनीति में महिलाओं की स्थिति के लिये जिम्मेदार सिर्फ राजनीतिक पार्टियां ही नहीं बल्कि हमारा समाज भी जो महिलाओं को राजनीति में स्वीकारने को तैयार नहीं होता है। फिर भी विश्व में भारत की महिला ने अपनी एक नितांत सम्मानजनक जगह कायम कर ली है।

संदर्भ :

1. पन्त कल्पना, कुमार के ग्राम नाम, पहाड़ प्रकाशन नैनीताल 2004
2. कु. लेथा आर, वूमन इन सोसायटी एडं पॉलिटिकस, ओथरस प्रेस दिल्ली 2006
3. शर्मा आराधना, पैराडॉगसेस ऑफ एमपॉवरमेंट, जुवान पब्लि. दिल्ली 2010
4. विजय संगीता, महिलाओं की राजनैतिक सहभागिता नवजीवन पब्लि. जयपुर 2011
5. महिपाल, पंचायत राज : चुनौतियां एवं संभावनायें नेशनल वुक ट्रस्ट इंडिया दिल्ली 2004
6. चतुर्वेदी शक्ति, पंचायत राज एवं महिला राजनैतिक भागीदारिता, वनस्थली विद्यापीठ 2009
7. कल्पागम यू., रूरल वूमैन इन एशिया, रावत पब्लि. जयपुर 2007

❖ ❖ ❖